इकाई 4 गृहारम्भ विधि

इकाई की संरचना

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 शिलान्यास विधि

4.4 वास्तुपूजन एवं शिलान्यास पूजन विधि

4.5 गृहनिर्माण

4.6 सारांश

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

4.10 सन्दर्भ सहायक पाठ्य सामग्री

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- शिलान्यास के महत्त्व को जान सकेंगे।
- गृहनिर्माण में शिलान्यास विधि को जानकर जागरुक हो सकेंगे।
- गृहनिर्माणारम्भ में वास्तु पूजन एवं शिला पूजन विधान को विस्तार से जान सकेंगे।
- गृहारम्भ की विधि का अवगाहन कर सकेंगे।
- गृहनिर्माण में शिला स्थापन के पश्चात् के कार्यों का विश्लेषण कर सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

गृहारम्भविधि से सम्बन्धित इस इकाई में आपका स्वागत है। गृहारम्भ विचार के अन्तर्गत आपने अभी तक गृहारम्भ मुहूर्त के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया है। आप जानते हैं कि मानव के जीवन में गृह एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और मुहूर्तशास्त्र के ग्रन्थों में उस गृह के निर्माण के लिए शुभ समय का चिन्तन किया गया है। इससे पूर्व की इकाई में हम गृहनिर्माण मुहूर्त विचार के महत्त्व को जानते हुए मुहूर्तशास्त्र के विविध ग्रन्थों के अनुसार गृहनिर्माण में शुभ समय पर विचार कर चुके हैं। कौन से मुहूर्त गृह निर्माण में ग्राह्य है और कौन से मुहूर्त गृह निर्माण में त्याज्य है ? इन सब विषयों का अध्ययन हमने किया है।

इससे पहले आपने गृहारम्भ के राहुमुख, खातविचार, कालशुद्धि, मासविचार, चक्रशुद्धि, पञ्चाङ्गशुद्धि एवं लग्नशुद्धि आदि विषयों को जाना है। मुहूर्त शोधन के पश्चात् शिलान्यास कर गृह निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। अतः प्रस्तुत इकाई में अब आप विस्तार से गृहारम्भ को करने की विधि एवं पूजनादि विषय में विस्तार से पढेंगे।

4.3 शिलान्यास विधि

भवन निर्माण की नींव रखना ही 'शिलान्यास' कहलाता है। इसके लिए उपयुक्त स्थान पर नींव हेतु खोदे हुए गड्ढे (पूर्वोक्त राहुमुख विचार कर किया हुआ खात) में पूजनपूर्वक पाँच शिलाओं को स्थापित किया जाता है। बृहत्संहिता के अनुसार पाँच शिलाओं में से पहली शिला अग्निकोण में गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, माला, बलि, उपहार एवं दक्षिणापूर्वक पूजा कर स्थापित करें। शेष शिलाएं प्रदक्षिण क्रम में स्थापित करें। जहाँ शिलान्यास किया गया हो वहीं पर स्तम्भ (खम्भा) उठाने का कार्य करें। उस समय भी गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप, माला, छत्र, वस्त्र, बलि, उपहार एवं दक्षिणादि प्रदान कर निर्माण कार्य करना चाहिए। गर्गादि मुनियों के मतानुसार शिलान्यास की विधि निम्न है-

शिलान्यास काल में अनेक प्रकार की वस्तुओं जैसे समुद्रोत्पन्न विविध रत्न, सुवर्ण, चांदी, सर्वबीज, गन्ध, शर, दर्भ, घृत, केतकी पुष्प, मधु, आमिष अर्थात् मांस, मद्य, विविध फल, खीर एवं जलपूर्ण कलशों को प्रत्येक कोने में स्थापित करें। अग्नि में विधिवत् आहुतियाँ प्रदान कर मुहूर्तानुरूप गृह के कोनों में सभी की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। सर्वप्रथम आग्नेय कोण (मतान्तर से ईशानकोण) में शिला स्थापित कर पूर्व से प्रदक्षिणा क्रम में अन्य शिलाएं स्थापित करें। इसी प्रकार से स्तम्भारोपण, द्वारावरोहण करना चाहिए।

उपर्युक्त गर्गादि ऋषियों के मतानुसार प्रथम शिला का न्यास ईशानकोण में होना चाहिए परन्तु काश्यपादि का मत है कि- सूत्र, भित्ति,शिलान्यास व स्तम्भारोपण का आरम्भ पूर्व-दक्षिण कोण अर्थात् आग्नेय कोण से करना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

1. भवन निर्माण की नींव रखना क्या कहलाता है?
2. नींव हेतु खोदे हुए गड्ढे में पूजनपूर्वक कितनी शिलाओं को स्थापित किया जाता है?
3. बृहत्संहिता के अनुसार पाँच शिलाओं में से पहली शिला किस कोण में स्थापित करनी चाहिए?
4. स्तम्भ (खम्भा) उठाने का कार्य कहाँ करना चाहिए?
5. गर्गादि ऋषियों के मतानुसार प्रथम शिला का न्यास किस कोण में होना चाहिए?
6. काश्यपादि के मत में सूत्र, भित्ति,शिलान्यास व स्तम्भारोपण का आरम्भ किस कोण से करना चाहिए?

4.4 वास्तु पूजन एवं शिलान्यास पूजन विधि

यजमान सपत्नीक स्नानादि कर्म से पवित्र होकर एवं नवीन यज्ञोपवीत- वस्त्रादि धारण कर पूर्वाभिमुख पूजनस्थल में बैठकर दीप प्रज्वालित करके निम्न मन्त्र से पवित्री धारण करें।

मन्त्र - पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उप्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण

सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

इसके बाद तीन बार आचमन करके इस मन्त्र से अपने ऊपर एवं पूजन सामग्री पर जल छिड़कना चाहिए।

मन्त्र - अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

तत्पश्चात् विष्णु का ध्यान करते हुए प्राणायाम करें। गौरसर्षप (पीली सरसों) को निम्न मन्त्र से चारों दिशाओं में फेंकना चाहिए।

मन्त्र - अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिता। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।

इसके बाद पृथ्वी पूजन, धूपपात्र, शंख, घण्टा, दीपादि का पूजन कर सूर्यार्घ्य प्रदान करके शान्तिपाठ करना चाहिए। आचार्य वरण-पूजनादि के बाद स्वस्तिवाचन करके 'देश काल' आदि के उच्चारणपूर्वक निम्न वास्तुपूजन संकल्प करना चाहिए।

संकल्प- विष्णुर्विष्णुः हरिः हरिः । श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे .....नगरे/ग्रामे/क्षेत्रे अद्य .....नामसंवत्सरे .....मासे ..... पक्षे .....तिथौ.....नक्षत्रे .....योगे..... करणे .....वासरे .....राशिस्थिते सूर्ये.....राशिस्थिते चन्द्रे.....राशिस्थिते भौमे.....राशिस्थिते बुधे.....राशिस्थिते देवगुरोः .....राशिस्थिते दैत्यगुरोः.....राशिस्थिते शनैश्चरे .....राशिस्थिते राहोः .....राशिस्थिते केतोः एवं ग्रहगणगुणविशिष्टायां शुभावसरे .....गोत्रः.....राशिः.....शर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं वा) श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् आधिभौतिकाधिदैविकाध्यात्मिकत्रिविधतापशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं नित्यकल्याणलाभाय स्थलेऽस्मिन् चिरकालनिवासार्थं पुत्रपौत्रधनधान्यसमृद्ध्यर्थं गृहारम्भं करिष्ये। गृहनिर्माणायशिलान्यासं करिष्ये। तदंगत्वेन गणपतिगौरीपूजनं कलशस्थापनं नवग्रहादिपंचांगपूजनं वास्तुपूजनञ्च करिष्ये।

गणेशादि पंचांग पूजन इसके बाद गृहारम्भ में एकाशीतिपदवास्तु बनाकर वास्तुपूजन करना चाहिए-

वास्तुमण्डलनिर्माण विधि - वास्तुपीठ के चारों कोनों में चार लोह शंकु(कील) ईशानादि में प्रदक्षिण क्रम से आरोपित करने चाहिए। सर्वप्रथम निम्न मन्त्रों से भूतोत्सर्जन करना चाहिए-

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रत्यं तत्र गच्छतु।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिषम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे।
भूतप्रेतपिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः। स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यं स्वीकरोतु व्रजन्त्विमे।।

फिर इस मन्त्र से चारों कोनों में कीलारोपण करें -

विषन्तु भूतले नागाः लोकपालाश्च सर्वतः। अस्मिन् गृहेऽवतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा।।

तत्पश्चात् माषभक्तबलि (उडद व चावल मिश्रित कर देवतादि के निमित्त दिया गया उपहार या भोजन) निम्न मन्त्र से प्रदान करें -

अग्निभ्योऽप्यथ सर्वेभ्यो ये चान्ये तत्समाश्रिताः। तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम्।।

1- **वास्तुपूजनविधि -** तब वेदी के ऊपर कुंकुमादि से सोने या चांदी की शलाका से पश्चिम से आरम्भकर पूर्व की ओर दश रेखाएं दो अंगुलि के अन्तर से निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अंकित करें।

प्रथमरेखा - शान्तायै नमः, द्वितीया रेखा - यशोवत्यै नमः, तृतीया रेखा - कान्तायै नमः,

चतुर्थरेखा - विशालायै नमः, पंचमरेखा - प्राणवाहिन्यै नमः, षष्ठ रेखा - सत्यै नमः,

सप्तमरेखा - सुमनायै नमः, अष्टम रेखा - नन्दायै नमः, नवम रेखा - सुभद्रायै नमः, दशम रेखा - सुरथायै नमः।

तत्पश्चात् दक्षिण से आरम्भ करके उत्तर की ओर दश रेखाएं निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अंकित करें।

प्रथमरेखा - हिरण्यायै नमः, द्वितीया रेखा - सुव्रतायै नमः, तृतीया रेखा - लक्ष्म्यै नमः,

चतुर्थरेखा - विभूत्यै नमः, पंचमरेखा - विमलायै नमः, षष्ठ रेखा - प्रियायै नमः,

सप्तमरेखा - जयायै नमः, अष्टम रेखा - ज्वालायै नमः, नवम रेखा - विशोकायै नमः, दशम रेखा - विशदायै नमः।

इस प्रकार इक्यासी पदवास्तुमण्डल का निर्माण करके उन रेखाओं का गन्धादि से पूजन कर **सर्वज्ञानक्रियाव्यक्तकमलासनाय योगपीठाय नमः** उच्चारण कर पीठ पर पुष्प अक्षत चन्दन डालें। इसके पश्चात् ईशान कोण के पद से आरम्भ कर प्रदक्षिण क्रम से चावल के पुंजों पर शिख्यादि 45 देवताओं का आवाहन पूजन करें।

विनियोग - ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः परमात्मा देवता व्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभारद्वाजाः ऋषयः गायत्रीः त्रिष्टुप-अनुष्टुपछन्दांसि अग्निवायुसूर्याः देवताः शिख्यादिदेवता आवाहने विनियोगः।

1. ईशानकोण के पहले लालरंग के कोष्ठ में - तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहेव्वयम्।

पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

आवाहयाम्यहं देवं रक्तवर्णं सुशोभनम्। शिखिनं ज्वलनप्रख्यं नागहारविभूषितम्।।

भूर्भुवः स्वः शिखिन इहागच्छ इहतिष्ठ, शिखिने नमः। शिखिनमावाहयामि स्थापयामि।।

2. उसके दक्षिण पद में पीलेरंग के कोष्ठ में - महाँऽइन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिर्मा इव। स्तोमैर्व्वत्सस्य व्वावृधे।।

आवाहयाम्यहं देवं पर्जन्यं पीतवर्णकम्। चतुर्वक्त्रं महौजस्कं चतुर्बाहुविभूषितम्।।

भूर्भुवः स्वः पर्जन्य इहागच्छ इहतिष्ठ, पर्जन्याय नमः। पर्जन्यमावाहयामि स्थापयामि।।

3- उसके दक्षिण पद में पीलेरंग के कोष्ठ में - धन्वना गा धन्वनाऽऽजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।

धनुः शत्रोरपकर्म कृणोति धन्वना सर्वा प्रदिशो जयेम।।

आवाहयाम्यहं देवं जयन्तं भुवनेश्वरम्। पीतवर्णं महान्तं च खंगखेटकधारिणम्॥

भूर्भुवः स्वः जयन्त इहागच्छ इहतिष्ठ, जयन्ताय नमः। जयन्तमावाहयामि स्थापयामि॥

4. उसके दक्षिण पद में पीलेरंग के कोष्ठ में - महाँऽइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि॥

आवाहयाम्यहं देवं महेन्द्रं च महाप्रभुम्। पीतवर्णं महाघोरं वज्रपाणिं सुरेश्वरम्॥

भूर्भुवः स्वः कुलिशायुध इहागच्छ इहतिष्ठ, कुलिशायुधाय नमः। कुलिशायुधम् आवाहयामि स्थापयामि॥

5. लालरंग के कोष्ठ में - सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँऽअजस्रम्।

तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्त्सम्पष्यन् विष्वा भुवनानि गोपाः॥

आवाहयाम्यहं देवमादित्यं दिव्यतेजसम्। द्विभुजं च सहस्राशुं दिव्यमालाविभूषितम्॥

भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ, सूर्याय नमः। सूर्यमावाहयामि स्थापयामि॥

6. श्वेतवर्ण के कोष्ठक में - व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया आप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्ध्या सत्यमाप्यते॥

आवाहयाम्यहं देवं सत्यं सत्यैकदेवतम्। शुक्लाभं शुक्लवर्णं च शुक्लमालाविभूषितम्॥

भूर्भुवः स्वः सत्य इहागच्छ इहतिष्ठ, सत्याय नमः। सत्यमावाहयामि स्थापयामि॥

7. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - भद्रं कर्णेभिः शृणुयामि देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायः॥

आवाहयाम्यहं देवं भृशं च परमेश्वरम्। कृष्णाब्जं नीलकण्ठं च चतुर्बाहुं सुरेश्वरम्॥

भूर्भुवः स्वः भृश इहागच्छ इहतिष्ठ, भृशाय नमः। भृशमावाहयामि स्थापयामि॥

8. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - वयं सोमव्रते तव मनस्तनुषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

आवाहयाम्यहं देवमाकाशं च महाबलम्। शब्दब्रह्मपरं देवं हैमं च कृष्णसन्निभम्॥

भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छ इहतिष्ठ, आकाशाय नमः। आकाशमावाहयामि स्थापयामि॥

9. धूमवर्ण के कोष्ठक में - आ वायो भूष शुचिपा उपनः सहस्रं ते नियुक्तो विश्ववार।

उपोतेऽअन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयं वायवे त्वा॥

आवाहयाम्यहं देवं देवदेवं महाजवम्। जगद्रूपं जगद्व्याघ्रं स्थितिसंहारकारकम्॥

भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ, वायवे नमः। वायुमावाहयामि स्थापयामि॥

10. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - पूषन्त व्रते वयं नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तऽ इह स्मसि॥

आवाहयाम्यहं देवं पूषणं महसाम्पदम्। जगन्नेत्रं महान्तं च स्थितिसंहारकारकम्॥

भूर्भुवः स्वः पूषन् इहागच्छ इहतिष्ठ, पूष्णे नमः। पूषामावाहयामि स्थापयामि॥

11. श्वेतवर्ण के कोष्ठक में - सविता प्रथमेऽहन्नाग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पंचम ऋतुः षष्ठे

मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे। मित्रो नवमे वरुणो दशम इन्द्र एकादशे विश्देदेवा द्वादशे।।

आवाहयाम्यहं देवं वितथं दिव्यतेजसम्। ब्रह्मरूपं जगन्नाथं चतुर्वक्त्रं प्रजापतिम्।।

भूर्भुवः स्वः वितथ इहागच्छ इहतिष्ठ, वितथाय नमः। वितथमावाहयामि स्थापयामि।।

12. पीतवर्ण के कोष्ठक में - सविता त्वा सवानां सुवतामग्निर्गृहपतीनां सोमो वनस्पतीनाम्।

बृहस्पतिर्व्वाच इन्दो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्।।

आवाहयाम्यहं देवं पीतवर्णं गृहक्षतम्। कमलाक्षं चतुर्बाहुं त्रैलोक्याधिपतिं प्रभुम् ।।

भूर्भुवः स्वः गृहक्षत इहागच्छ इहतिष्ठ, गृहक्षताय नमः। गृहक्षतमावाहयामि स्थापयामि।।

13. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - यमाय त्वांऽगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।।

आवाहयाम्यहं देवं यमं महिषवाहनम्। ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं भैरवं रक्तलोचनम्।।

भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इहतिष्ठ, यमाय नमः। यममावाहयामि स्थापयामि।।

14. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - प्रतद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत्।

त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पिताऽसत्।।

आवाहयाम्यहं देवं गन्धर्वगणशोभितम्। गीतनृत्यसमायुक्तं सुगन्धकुसुमान्वितम्।।

भूर्भुवः स्वः गन्धर्व इहागच्छ इहतिष्ठ, गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि स्थापयामि।।

15. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - सुपर्णः पार्जन्य आतिर्व्वाहसो दर्व्विदा ते वायवे बृहस्पतये व्वाचस्पतये

पंगराजोऽलजऽआन्तरिक्षः प्लवो मद्गुमर्मत्स्यस्ते नदीपतये द्यावापृथिवीयः कूर्मः।।

आवाहयाम्यहं देवं भृंगराजं महाप्रभुम्। कृष्णाङ्गं नीलकण्ठं च चतुर्बाहुं महाद्युतिम्।।

भूर्भुवः स्वः भृङ्गराज इहागच्छ इहतिष्ठ, भृङ्गराजाय नमः। भृङ्गराजमावाहयामि स्थापयामि।।

16. पीत वर्ण के कोष्ठक में - तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।

आवाहयाम्यहं देवं मृगं च परमेश्वरम्। सुवर्णाभं नीलकण्ठं चतुर्बाहुं सुशोभनम्।।

भूर्भुवः स्वः मृग इहागच्छ इहतिष्ठ, मृगाय नमः। मृगमावाहयामि स्थापयामि।।

17. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः

स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः षुन्धध्वम्।।

आवाहयाम्यहं देवं पितरं च सुधाकृतिम्।उद्दीप्य लोके तिष्ठन्तं चन्द्रार्कसदृशद्युतिम्।।

भूर्भुवः स्वः पितर इहागच्छत इहतिष्ठत, पितृभ्यो नमः। पितरमावाहयामि स्थापयामि।।

18. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - द्रविणोदाः षिपिषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यतः।।

आवाहयाम्यहं देवं विभुं दौवारिकं तथा। जीवरूपं त्वयैकेन यदिदं धार्यते जगत्।।

भूर्भुवः स्वः दौवारिक इहागच्छ इहतिष्ठ, दौवारिकाय नमः। दौवारिकमावाहयामि स्थापयामि।।

19. शुक्लवर्ण के कोष्ठक में - सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयोनाम।

स नऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा व्वाट् स्वाहा ताभ्यः स्वाहा।।

आवाहयाम्यहं देवं सुग्रीवं शुक्लवर्णकम्। पिङ्गनेत्रं महास्थूलं भैरवं तीक्ष्णदंष्ट्रकम्।।

भूर्भुवः स्वः सुग्रीव इहागच्छ इहतिष्ठ, सुग्रीवाय नमः। सुग्रीवमावाहयामि स्थापयामि।।

20. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाऽहोरात्रेभ्यः स्वाहाऽर्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहाऽवक्रतुभ्यः स्वाहार्तवेभ्यः स्वाहा संव्वत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहाऽऽदित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा।।

आवाहयाम्यहं देवं पुष्पदन्तं सुशोभनम्। रक्ताभं रक्तनेत्रं च रक्तमालाविभूषितम्।।

भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्त इहागच्छ इहतिष्ठ, पुष्पदन्ताय नमः। पुष्पदन्तमावाहयामि स्थापयामि।।

21. शुक्लवर्ण के कोष्ठक में - इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।।

आवाहयाम्यहं देवं वरुणं कमलेक्षणम्। शुक्लाम्बरधरं देवं शुक्लमालाविभूषितम्।।

भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ, वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि स्थापयामि।।

22. पीतवर्ण कोष्ठक में - ये रूपाणि प्रतिमुंचमानाऽअसुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।

परापुरो निपुरा से भरन्त्यग्निष्टाँलोकात्प्रणुदात्यस्मात्।।

आवाहयाम्यहमत्र असुरं च मरुत्प्रियम्। पीतरक्तं महारौद्रमसुरं दैत्यमंगलम्।।

भूर्भुवः स्वः असुर इहागच्छ इहतिष्ठ, असुराय नमः। असुरमावाहयामि स्थापयामि।।

23. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा व्विभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा संसर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा।।

आवाहयाम्यहं देवं शोषं च कृष्णवर्णकम्। रक्ताम्बरं विशालाक्षं यज्ञमूर्तिं सुरेश्वरम्।।

भूर्भुवः स्वः शोष इहागच्छ इहतिष्ठ, शोषाय नमः। शोषमावाहयामि स्थापयामि।।

24. पीतवर्ण कोष्ठक में - सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम्।

तस्य पूषा प्रसवे याति व्विद्वान्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।।

आवाहयाम्यहमत्र पापं यक्ष्माणमेव च। पापरूपं पीतवर्णं पापकर्मरतं सदा।।

भूर्भुवः स्वः पाप इहागच्छ इहतिष्ठ, पापाय नमः। पापमावाहयामि स्थापयामि॥

25. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि।
राजा मे प्राणोऽअमृतं सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोम्।
आवाहयाम्यहमत्र रोगं रोगेण सन्निभम्। रक्ताक्षं रक्तवर्णं च रक्तमालाविभूषितम्॥
भूर्भुवः स्वः रोग इहागच्छ इहतिष्ठ, रोगाय नमः। रोगमावाहयामि स्थापयामि॥

26. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - नमोऽस्तुते सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥
आवाहयाम्यहमत्र अनन्तं वासुकिं तथा। कालं कर्कोटकं चैव कुण्डलीकृष्णपिंगलम्॥
भूर्भुवः स्वः अहे इहागच्छ इहतिष्ठ, अहये नमः। अहिमावाहयामि स्थापयामि॥

27. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - इषे त्वोर्जेत्वा वायवस्थ देवोः वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमध्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽईषत माऽघशं सो ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि॥
आवाहयाम्यहं देवमत्र मुख्यं महाबलम्। अरुणश्मश्रुकेशान्तं त्रिनेत्रं चैव षड्भुजम्॥
भूर्भुवः स्वः मुख्य इहागच्छ इहतिष्ठ, मुख्याय नमः। मुख्यमावाहयामि स्थापयामि॥

28. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - बण्महाँऽ असि सूर्य बडादित्य महाँऽ असि।
महस्ते सतो महिमापनस्यतेऽद्वा देव महाँऽ असि ॥
आवाहयाम्यहं देवं भल्लाटं धूम्रलोचनम्। कृष्णवर्णं विशालाक्षं यज्ञकर्तुर्वरप्रदम्।
भूर्भुवः स्वः भल्लाट इहागच्छ इहतिष्ठ, भल्लाटाय नमः। भल्लाटमावाहयामि स्थापयामि॥

29. श्वेतवर्ण के कोष्ठक में - वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥
आवाहयाम्यहं देवं सोमं सौम्यदैवतम्। अमृतस्राविणं देवं सर्वलोकोपकारकम्॥
भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ इहतिष्ठ, सोमाय नमः। सोममावाहयामि स्थापयामि॥

30. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥
आवाहयाम्यहं देवमुरगं रत्नभूषितम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं भूमितलनिवासिनम्॥
भूर्भुवः स्वः सर्प इहागच्छ इहतिष्ठ, सर्पाय नमः। सर्पमावाहयामि स्थापयामि॥

31. पीतवर्ण कोष्ठक में - उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वजऽएकपात्पृथिवी समुद्रः।
विश्वे देवाऽऋतावृधो हुवाना स्तुता मन्त्राः कविशस्ताऽअवन्तु॥
आवाहयाम्यहं देवीं अदितिं च सुरेश्वरीम्। मातरं सर्वदेवानां पीतवर्णां सुशोभनाम्॥
भूर्भुवः स्वः अदिते इहागच्छ इहतिष्ठ, अदितये नमः। अदितिमावाहयामि स्थापयामि॥

32. पीतवर्ण कोष्ठक में - अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः।
व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥

आवाहयाम्यहं देवीं दितिं चैवासुरेश्वरीम्। पीतवर्णां महाकायां सर्वदानवमातरम् ।।

भूर्भुवः स्वः दिते इहागच्छ इहतिष्ठ, दितये नमः। दितिमावाहयामि स्थापयामि।।

33. शुक्लवर्ण के कोष्ठक में - आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तु धृतेन नो घृतष्वः पुनन्तु।

विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि।।

आवाहयाम्यहमत्र आपो याः स्फटिकप्रभा। कर्पूरसदृशाः सौम्याः क्षीरोदकपरिप्लुताः।।

भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छत इहतिष्ठत, अद्भ्यो नमः। अत्रावाहयामि स्थापयामि।।

34. शुक्लवर्ण के कोष्ठक में - उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाश्चनोधा ऽअसि चनो मयि धेहि।

जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सावित्रे।।

आवाहयाम्यहं देवं सावित्रं गजाननम्। एकाक्षरं शिवं सौरिं सवितारं महेश्वरम् ।।

भूर्भुवः स्वः सावित्र इहागच्छ इहतिष्ठ, सावित्राय नमः। सावित्रमावाहयामि स्थापयामि।।

35. श्वेतवर्ण के कोष्ठक में - मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्।

उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु।।

आवाहयाम्यहं देवं जयं देवेन्द्रपूजितम्। विद्युद्ध्वनिभवं भीमजवं हि विजयप्रभुम् ।।

भूर्भुवः स्वः जय इहागच्छ इहतिष्ठ, जयाय नमः। जयमावाहयामि स्थापयामि।।

36. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणदितिं सुप्रणीतिम्।

दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमारुहेमा स्वस्तये।।

आवाहयाम्यहं देवं रुद्रं च जगतः प्रभुम्। चतुर्भुजं वृषारूढं सर्वलोकनमस्कृतम्।।

भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ, रुद्राय नमः। रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

37. कृष्णवर्ण के कोष्ठक में - अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय।

व्वाचं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिं न स्वाहा।।

आवाहयाम्यहं देवमर्यमणं त्रिलोचनम्। वनस्पतिसमाकारं कृष्णवर्णं महाप्रभुम्।।

भूर्भुवः स्वः अर्यमन्निहागच्छ इहतिष्ठ, अर्यम्णे नमः। अर्यमणमावाहयामि स्थापयामि।।

38. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि चनोधाशचनोधा ऽअसि चनो मयि धेहि।

जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सावित्रे।।

आवाहयाम्यहं देवं सवितारं दिवाकरम्। सप्ताश्वरथसंयुक्तं तमोवृन्दनिवारणम्।।

भूर्भुवः स्वः सवितरिहागच्छ इहतिष्ठ, सवित्रे नमः। सवितारमावाहयामि स्थापयामि।।

39. शुक्लवर्ण के कोष्ठक में - व्विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व।

श्रदस्मै नरो व्वचसे दधातन यदाषीर्दा दम्पती व्वाममष्नुतः।

पुमान्पुत्रो जायते व्विन्दते व्यस्वधा व्विश्वाहाऽरपऽएधते गृहे।।

आवाहयाम्यहं देवं विवस्वन्तं महाबलम्। रक्तनेत्रं विशालाक्षं यज्ञमूर्तिं सुरेश्वरम्।।

भूर्भुवः स्वः विवस्वन्निहागच्छ इहतिष्ठ, विवस्वते नमः। विवस्वन्तमावाहयामि स्थापयामि।।

40. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।

व्वाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम।।

आवाहयाम्यहं देवं विबुधाधिपतिं प्रभुम्। नाकाधिपं सहस्राक्षं खड्गखेटकधारिणम्।।

भूर्भुवः स्वः विबुधाधिप इहागच्छ इहतिष्ठ, विबुधाधिपाय नमः। विबुधाधिपमावाहयामि स्थापयामि।।

41. श्वेतवर्ण के कोष्ठक में - तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्योरूपड्कृणुते द्योरुपस्थे।

अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति।।

आवाहयाम्यहं देवं मित्रं चारुणसन्निभम्। वज्रहस्तं सुरश्रेष्ठं यज्ञकर्मवरप्रदम्।।

भूर्भुवः स्वः मित्र इहागच्छ इहतिष्ठ, मित्राय नमः। मित्रमावाहयामि स्थापयामि।।

42. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - अभिगोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयोवीरः शतमन्युरिन्द्रः।

दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माकं सेनाऽअवतु प्रयुत्सु।।

आवाहयाम्यहं देवं द्विभुजं राजयक्ष्मणम्। धनुर्बाणसमायुक्तं यज्ञकर्मवरप्रदम्।।

भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ, राजयक्ष्मणे नमः। राजयक्ष्मणमावाहयामि स्थापयामि।।

43. रक्तवर्ण के कोष्ठक में - पृथिवीच्छन्दोऽन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणिच्छन्दो वाक् छन्दो

मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दोऽजाच्छन्दोऽश्वश्छन्दः।।

पृथ्वीधरं महत्तेजः स्फटिकच्छविमीश्वरम्। भूतनाथं महाकायं देवमावाहयाम्यहम्।।

भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधर इहागच्छ इहतिष्ठ, पृथ्वीधराय नमः। पृथ्वीधरमावाहयामि स्थापयामि।।

44. शुक्लवर्ण के कोष्ठक में - आ ते व्वत्सो मनो यमत्परमा चित्सधस्थात्। अग्ने त्वाड्कामया गिरा।।

आवाहयाम्यहं देवं आपवत्सं महाप्रभुम्। कर्पूरसदृशं सौम्यं क्षीरोदपरिपूरितम्।।

भूर्भुवः स्वः आपवत्स इहागच्छ इहतिष्ठ, आपवत्साय नमः। आपवत्समावाहयामि स्थापयामि।।

45. पीतवर्ण कोष्ठक में - आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरइषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषां जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्योऽनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

सर्वदेवप्रधानं च सर्वकामफलप्रदम्। अग्रतः सर्वसम्पूज्यं प्रारम्भे यज्ञकर्मणि ।।

भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ, ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

इसके पश्चात् मण्डप के बाहर ईशानादि चारों कोणों में चरकादि की स्थापना निम्न प्रकार से करनी चाहिए।

ईशानकोण में धूम्रवर्णा चरकी - ईशाव्वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

भूर्भुवः स्वः चरकि इहागच्छ इहतिष्ठ, चरक्यै नमः।

आग्नेयकोण में रक्तवर्णा विदारी - अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां आसादयादिह।।

भूर्भुवः स्वः विदारी इहागच्छ इहतिष्ठ, विदार्यै नमः।

नैर्ऋत्यकोण में हरितवर्णा पूतना -

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कूल्याय च

सरस्याय च नमो नादेयाय च व्वैशान्ताय च।। ।।

भूर्भुवः स्वः पूतने इहागच्छ इहतिष्ठ, पूतनायै नमः।

वायव्यकोण में कृष्णवर्णा पापराक्षसी - व्वायव्यैर्व्वायव्यान्याप्नोति स तेन द्रोणकलशम्।

कुम्भीभ्याममृणौ सुते स्थालीभि स्थालीराप्नोति ।।

भूर्भुवः स्वः पूतने इहागच्छ इहतिष्ठ, पूतनायै नमः।

तत्पष्चात् मण्डप के बाहर पूर्वादि चारों दिशाओं में स्कन्दादि की स्थापना निम्न प्रकार से करनी चाहिए।

पूर्व में रक्तवर्ण स्कन्द - यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा व्विशिखा इव।

तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विशेवाहा शर्म यच्छतु ।।

भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इहतिष्ठ, स्कन्दाय नमः।

दक्षिण में कृष्णवर्ण अर्यमन् - अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय।

व्वाचं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च व्वाजिनं स्वाहा।।

भूर्भुवः स्वः अर्यमन् इहागच्छ इहतिष्ठ, अर्यम्णे नमः।

पश्चिम में रक्तवर्ण जृम्भक - सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं व्वैशन्ताभ्यो व्वैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय केवर्तं तीर्थेभ्यऽआन्दं विषमेभ्यो मैनालं स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरातं सानुभ्यो जृम्भकं पर्वतेभ्यः किंपूरुषम्।।

भूर्भुवः स्वः जृम्भक इहागच्छ इहतिष्ठ, जृम्भकाय नमः।

उत्तर में पीतवर्ण पिलिपिच्छ - कास्विदासीत्पूर्वचित्तिः किं स्विदासीद्बृहद्वयः।

कास्विदासीत्पिलिप्पिला कास्विदासीत्पिशगिंला।।

भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छ इहागच्छ इहतिष्ठ, पिलिपिच्छाय नमः।

ईशान में रक्तवर्ण भीम - यमाय त्वांऽगिरसस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मपित्रे॥ भीमाय नमः।

आग्नेय में कृष्णवर्ण त्र्यम्बक - त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥ त्र्यम्बकाय नमः।

नैर्ऋत्य में पीतवर्ण अग्निजिह्वा - असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदच्छ सा तऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥ अग्निजिह्वाय नमः।

वायव्य में रक्तवर्ण कराल - वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशतिः।

तेऽअग्रेऽश्वमयुंजँस्तेऽअस्मिंजवमादधुः॥ करालाय नमः।

पूर्व में - हेमन्ते न ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुतस्तुताः। बलेन शक्करीः सहो हविरिन्द्रे व्वयो दधुः॥ हेतुकाय नमः।

दक्षिण में - अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां आसादयादिह॥ अग्निवेतालकाय नमः।

पश्चिम में - वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो व्वरुणस्यऽ ऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद। वरुणाय नमः।

उत्तर में - कुविदंगयवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं व्वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति॥ कुबेराय नमः।

ईशान-पूर्व के मध्य में- गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ज्वालास्वरूपिण्यै नमः।

पूर्व - भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छ इहतिष्ठ, गणेशाय नमः।

दक्षिण - भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ, दुर्गायै नमः।

पश्चिम - भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ, वायवे नमः।

उत्तर - भूर्भुवः स्वः बीभत्स इहागच्छ इहतिष्ठ, बीभत्साय नमः।

पूर्व - भूर्भुवः स्वः उग्रसेन इहागच्छ इहतिष्ठ, उग्रसेनाय नमः।

दक्षिण - भूर्भुवः स्वः डामर इहागच्छ इहतिष्ठ, डामराय नमः।

पश्चिम - भूर्भुवः स्वः महाकाल इहागच्छ इहतिष्ठ, महाकालाय नमः।

उत्तर - भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छतम् इहतिष्ठतम्, अश्विभ्यां नमः।

पूर्व - भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ, इन्द्राय नमः।

आग्नेय- भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ, अग्नये नमः।

दक्षिण - भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इहतिष्ठ, यमाय नमः।

नैर्ऋत्य - भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ठ, निर्ऋतये नमः।

पश्चिम - भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ, वरुणाय नमः।

वायव्य - भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ, वायवे नमः।

उत्तर - भूर्भुवः स्वः कुबेर इहागच्छ इहतिष्ठ, कुबेराय नमः।

ईशान - भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ, ईशानाय नमः।

ईशान व पूर्व के मध्य - भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ, रुद्राय नमः।

भूमि में - भूर्भुवः स्वः भूमे इहागच्छ इहतिष्ठ, भूम्यै नमः।

उपर्युक्त प्रकार से शिख्यादि देवताओं का आवाहन करके निम्न मन्त्र से प्रतिष्ठा करें-

मन्त्र- मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञं समिमन्दधातु। विश्वे देवासऽइहमादयन्तामोऽम्प्रतिष्ठ।। भूर्भुवः स्वः वास्तुमण्डलदेवताः इहागच्छन्तु, इहतिष्ठन्तु, सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु, वास्तुमण्डलदेवेभ्यो नमः।

तत्पश्चात् मण्डल के ईशान या उत्तर में कलश स्थापित कर उसका पूजन करें। कलशप्रार्थना के पश्चात् उसके ऊपर सुवर्णमयी वृषवास्तुप्रतिमा (मतान्तर से चांदी का नाग) को अग्न्युत्तारण पूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करके पट्टवस्त्राभूषण से सुसज्जित कर स्थापित करें-

विनियोग- वास्तोष्पते इति मन्त्रस्य वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुपछन्दो वास्तुदेवता वृषवास्तुस्थापने विनियोगः।

स्थापनमन्त्र - वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेषोऽअनमीवो भवानः।

यत्वेमहे प्रति तन्नोजुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

आगच्छ भगवन् वास्तो सर्वदेवैरधिष्ठितः।भगवन्कुरु कल्याणं कार्येऽस्मिन् सन्निधो भव।।

भूर्भुवः स्वः भो वास्तु पुरुष महाबल पराक्रम सर्वदेवाश्रित शरीर ब्रह्मपुत्र सकलब्रह्माण्डधारिन् भगवन्निहागच्छ, इहतिष्ठ, सुप्रतिष्ठितो वरदा भव, वास्तुपुरुषाय नमः।

इसके पश्चात् शिख्यादि अंगदेवताओं का एकतन्त्र अथवा अभिलषित तन्त्र से पूजन करना चाहिए।

इस प्रकार से वास्तुमण्डल देवताओं का पूजन करके यह वाक्य कहकर जल छोडें।

इह स्थापितदेवताभ्यो इमानि गन्धाक्षत पुष्पधूप दीपाच्छादन नैवेद्यतांबूल दक्षिणादीनि समर्पयामि।

इस तरह अंगदेवताओं का पूजन करके क्षमा प्रार्थना करनी चाहिए। इसके बाद प्रधान वास्तुपुरुष का पुरुषसूक्त से षोडषोपचार से पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् वहाँ से ताम्बूल एवं दक्षिणा सहित बलि प्रदान करें- एह्येहि भगवन्वास्तो इमं मयोपनीतं बलिं गृहाण मम गृहमच्छिद्रं कुरु सकलदुष्टग्रहभूतपिशाचवेतालब्रह्मराक्षसेभ्यो रक्ष रक्ष स्वाहा। इसके पश्चात् प्रार्थना कर अर्घ्यदान करें-

प्रार्थना- यज्ञभागं प्रतीक्षस्व पूजां चैव बलिं मम। नमो नमस्ते देवेश मम स्वस्तिकरो भव।।

अर्घ्यदान- पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षार्थहेतवः। त्वद्विना नैव सिध्यन्ति यज्ञदानान्यनेकशः।।

अयोने भगवन्भर्गललाटस्वेदसंभवः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं वास्तो स्वामिन्नमोऽस्तुते।।

क्षमापन- मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धासमन्वितम्। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वविघ्नहरो भव। शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान्प्रयच्छ मे।।

2- शिलापूजन - तत्पश्चात् उपशिला सहित 5 शिलाओं की स्थापना करनी चाहिए। सर्वप्रथम उपशिलाओं के ऊपर क्रमशः पद्म, सिंहासन, तोरण, छत्र, कूर्म एवं चतुर्भुजविष्णु अंकित करना चाहिए। इसके बाद उनमें इन मन्त्रों से नन्दादि का आवाहन करना चाहिए।

1. भुर्भुवः स्वः नन्दायै नमः। नन्दामावाहयामि।
2. भुर्भुवः स्वः भद्रायै नमः। भद्रामावाहयामि।
3. भुर्भुवः स्वः जयायै नमः। जयामावाहयामि।
4. भुर्भुवः स्वः रिक्तायै नमः। रिक्तामावाहयामि।
5. भुर्भुवः स्वः पूर्णायै नमः। पूर्णामावाहयामि।

इसके बाद सप्तमृतिका एवं जल से शिला की स्थापना करनी चाहिए।

मन्त्र - अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपां सिरेतां सिजिन्वति।

पंचकषाय (पीपल, पाकर, बड, गूलर एवं बेंत की जड के छाल) एवं जल से शिलाओं का स्नान कराना चाहिए।

मन्त्र - यज्ञा यज्ञावोऽअग्नये गिरा गिरा च दक्षसे। प्रप्रवयममृतं जातवेदसम्प्रियाम्मित्रशं सिषम्।।

गोमूत्र से शिलास्नान मन्त्र- भुर्भुवः स्वः .....गायत्री मन्त्र।

गोमय से शिलास्नान मन्त्र- गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।

ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

पंचगव्यस्नान - पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

दुग्धस्नान - आप्यायस्वसमेतुते विश्वतः सोमत्वृष्णतम्। अपां वाजस्य संगथे।।

दधिस्नान - दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयूं षितारिषत्।।

घृतस्नान - घृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेश्रितो घृतं वस्यधाम।

अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यम्।।

मधुस्नान - मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ2अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

शर्करास्नान - अपां रसमुद्वयसं सूर्ये सन्तं समाहितम्।

अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

फलोदकस्नान - याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुंचन्त्वं हसः।।

कुशोदकस्नान - देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्वनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचाम्यसौ।।

दूर्वोदकस्नान - काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परूषस्परि।

एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

गोशृंगोदकस्नान - हविष्मतीरिमाऽआपोहविष्मांऽआविवासति।

हविष्मान् देवोऽअदध्वरो हविष्मोंऽअस्तु सूर्यः।।

नदीजलस्नान - पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवतत्सरित्।।

गंगाजलस्नान - इमं मे गंगे यमुने सरस्वती शतद्रुस्तोमं सचता परुष्ण्या।

आसिक्न्यामरुद्वृधे वितस्तयोजीकीये शृणुह्याविषोमया।।

उपर्युक्त शिलास्नानोपरान्त पद्म, महापद्म, शंख, विजय एवं सर्वतोभद्र नामांकित पाँच कलशों की विधिपूर्वक स्थापना कर नाम मन्त्र से पूजन करना चाहिए। मध्य में पद्म कलश के ऊपर कूर्म सहित वासुकि, तक्षक, कुलिक, कर्कोटक, पद्म, शंखचूड, महापद्म एवं धनञ्जय इन आठ नागों की स्थापना एवं पूजन करना चाहिए -

आवाहन एवं पूजन मन्त्र - वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेषोऽअनमीवो भवानः।

यत्वेमहे प्रति तन्नोजुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

भूर्भुवः स्वः कूर्मसहिताय अष्टनागेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

अर्घ्य - सर्वलक्षणसम्पन्नः सर्वेषः कलशाधिपः। स्थानं देहि गृहं कर्तुं विष्णुरूपः नमोस्तुते।। कूर्माय एष अर्घ्यः।

हिमकुन्दः प्रतिकाशः नागानन्तः महाफणिन्। स्थानं देहि गृहं कर्तुं गृहाणार्घ्य नमोस्तुते।। नागेभ्य एष अर्घ्यः।

इसके पश्चात् आचार्यादि वरणपूर्वक वेदिका का निर्माण कर हवन करना चाहिए।

प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम।

अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषां सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।

सत्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसौ व्युष्टौ अवयक्ष्वनो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।।

अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्त्वमित्त्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषजं स्वाहा।। इदमग्नये न मम।

ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशाः विततः महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद् वाधमं विमध्यमं श्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तनावागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणाय न मम। (यहाँ प्रणीतोदक स्पर्श करें।)

इसके बाद गणपति नवग्रहादि को मन्त्रपूर्वक आहुतियाँ देकर 108 बार निम्न त्र्यम्बक मन्त्र से आहुति प्रदान करें।

मन्त्र - त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनाद् मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिवबन्धनाद् मृत्योर्मुक्षीयमामुतः।।

तदनन्तर निम्नमन्त्रों से आहुति प्रदान करें -

1. पृथिव्यै स्वाहा। (28 बार), 2. नन्दायै स्वाहा। (28 बार),
3. भद्रायै स्वाहा। (28 बार), 4. जयायै स्वाहा। (28 बार),
5. रिक्तायै स्वाहा। (28 बार), 6. पूर्णायै स्वाहा। (28 बार),

पद्माय स्वाहा। महापद्माय स्वाहा। शंखाय स्वाहा। विजयाय स्वाहा। सर्वतोभद्राय स्वाहा।

इसके बाद शिख्यादि देवताओं को आहुति प्रदान करें। फिर निम्न मन्त्र से तिलमिश्रित खीर अथवा घृत की 108 बार अथवा 54 बार आहुति देनी चाहिए -

वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशोऽअनमीवो भवानः।

यत्वेमहे प्रति तन्नोजुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे स्वाहा।। इदं वास्तोष्पतये।

तब ज्योतिषशास्त्रोक्त विहित दिशा में 4 हाथ पर्यन्त पहले से खोदे गए गड्ढ़े को गोबर एवं जल से लीपकर पृथ्वी का ध्यान निम्न मन्त्र से करें।

ध्यान मन्त्र - कूर्मपृष्ठे परिष्ठां च शुक्लवर्णां चतुर्भुजाम्। हेमगर्भा क्षमारूपां शेषस्योपरिशायिनीम्।

स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म स प्रथाः। अवनः शोशुचदधम्।।

इस प्रकार पृथिवी एवं कूर्म का ध्यान करके मानसिक पूजन कर ' भूम्यै नमः' इस प्रकार उच्चारित कर निम्न मन्त्र से जलार्घ्य देना चाहिए।

अर्घ्य मन्त्र - आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि। उद्धृतासि वराहेण सशैलवनकानने।।

वसुधे हेमगर्भासि शेषस्योपरिशालिनी। तवपृष्ठं ददाम्येतद् गृहाणार्घ्यं धरित्रि मे।।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां भद्रे प्रसन्ना सुखदा भव।।

तत्पश्चात् खील सक्तु दूर्वादि के साथ भूमि के लिए बलि प्रदान कर निम्न प्रार्थना करें -

प्रार्थना मन्त्र - सर्वबीजसमायुक्तं सर्वरत्नौघसंयुते। पूजिते परमाचायैर्गन्धमाल्यैरलंकृतैः।।

इष्टकामं प्रयच्छ त्वं त्वामहं शरणागतः। पुत्रदारधनादुष्टां धर्मवृद्धिकरी भव।।

तत्पश्चात् खातभूमि में चावलों से सर्पाकार वास्तुपुरुष को लिखकर निम्न मन्त्र से आवाहन करे -

मन्त्र - आवाहयाम्यहं देवं भूमिष्ठं चाप्यधोमुखम्।

वास्तुनाथं जगत्प्राणं पूर्वस्यां प्रमथाश्रितम्।।

पुनः वास्तोष्पतये नमः इस मन्त्र से पूजन कर निम्न प्रार्थना करनी चाहिए -

प्रार्थना मन्त्र - वास्तोष्पते ! नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरतं प्रभो। मद्गृहं धनधन्यादिसमृद्धिं कुरु सर्वदा।।

इसके बाद आधारशिला को हाथ में पकड़कर उसके मध्य में अक्षत रखकर, द्रव्य (सिक्का) एवं कलशजल के साथ गर्त (खात या गड्ढ़े) में रखना चाहिए। उसके बाद मधु, घृत, पारद, सुवर्ण, पंचरत्न, गन्ध आदि से विभूषित पद्म कुम्भ को गर्त के मध्य में आधारशिला के ऊपर निम्न मन्त्र के साथ स्थापित करना चाहिए -

स्थापन मन्त्र - नाभिर्मेचित्तं विज्ञानम्पायुर्मे पचति भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यसम्पदः।

जंघाभ्याम्पद्भ्याम्धर्मोऽस्थि विशिराजा प्रतिष्ठितः।।

स्थिरो भव वीडवंगऽनाशुर्भववाज्यर्वन्। पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्ने पुरीषवाहनः।।

पद्मायै नमः। आधारशक्त्यै नमः।।

तदनन्तर चारों दिशाओं में महापद्मादि चारों कलशों को इसी प्रकार से स्थापित कर पंचोपचार से पूजन करना चाहिए। कलशों को समतल मिट्टी या ईंट अथवा अन्य दृढ़करण वस्तु पर रखकर सदीप मध्य कलश में पूर्णा की स्थापना व पूजन करके निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें -

पूर्णा प्रार्थना मन्त्र - पूर्णा त्वं सर्वदा पूर्णान् लोकांश्च कुरु काश्यपि।

आयुर्दा कामदा देवि धनदा सुतदा तथा।।

गृहधारा वास्तुमयी वास्तुदीपेन संयुता।

त्वामृते नास्ति जगतामाधारश्च जगत्प्रिये।।

इसके बाद पूर्व दिशा (अथवा ईशानकोण) में स्थित सदीप कलश में नन्दा की स्थापना कर प्रार्थना करें -

नन्दा प्रार्थना मन्त्र - नन्दे त्वं नन्दिनी पुंसां त्वामत्र स्थापयाम्यहम्।

वेश्मनि त्विह सन्तिष्ठ यावच्चन्द्रार्कतारकाः।।

आयुः कामं श्रियं देहि देववासिनी नन्दिनी।

अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या सदा वेश्मनि यत्नतः।।

इसके बाद दक्षिणदिशा (अथवा आग्नेयकोण) में स्थित सदीप कलश में भद्रा की स्थापना कर प्रार्थना करें -

भद्रा प्रार्थना मन्त्र - भद्रे त्वं सर्वदा भद्रं लोकानां कुरु काश्यपि।

आयुर्दा कामदा देवि सुखदा च सदा भव।।

त्वामत्र स्थापयाम्यद्य गृहेऽस्मिन् भद्रदायिनी।।

इसके बाद पश्चिमदिशा (अथवा नैर्ऋत्यकोण) में स्थित सदीप कल में जया की स्थापना कर प्रार्थना करें -

जया प्रार्थना मन्त्र - गर्गगोत्रसमुद्भूतां त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम्।

गृहेऽस्मिन् स्थापयाम्यद्य जयां चारुविलोचनाम्।।

नित्यं जयाय भूत्यै च स्वामिनी भव सर्वदा।।

इसके बाद उत्तरदिशा (अथवा वायव्यकोण) में स्थित सदीप कलश में रिक्ता की प्रार्थना करें -

रिक्ता प्रार्थना मन्त्र - रिक्ते त्वं रिक्तदोषघ्ने सिद्धिभुक्तिप्रदे शुभे।

सर्वदा पर्वदोषघ्नि तिष्ठास्मिंस्तत्र नन्दिनी।।

इसके बाद पुष्पांजलि ग्रहणकर निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करें -

नन्दे नन्दाय वाशिष्ठे वसुभिश्च हितप्रजे। सुचिरे नन्ददे नन्दे वाशिष्ठे रम्यतां गृहे।।

भद्रे काश्यपदायादे पूजनं भद्रमावह। सुभगे सुव्रते देवि ! गृहे काश्यपि रम्यताम्।।

जये भार्गवदायादे पूजनं भद्रमावह। भवभूतिकरी देवि ! गृहे भार्गवि रम्यताम्।।

सर्वबीजसमायुक्ते सर्वगन्धौषधेर्वृते। प्रजापतिसुते देवि ! सुखदास्तु महीसुते।।

पूर्णेऽङ्गिरसदायादे पूर्णकामाः प्रजाः कुरु। पूजिते परमाचार्ये गन्धमाल्यैरलंकृते।।

अव्यंगे चाक्षते पूर्णे मुनेरङ्गिरसः सुते। इष्टके त्वं प्रयच्छेष्टं प्रतिष्ठा गृहिणं कुरु।।

ग्रामस्वामि पुरस्वामि गृहस्वामि परिग्रहे। मनुष्यपशुहस्त्यश्वधनवृद्धिकरी भव।।

तब ईशान भाग में 24 अंगुल या 16 अंगुल खदिर अथवा पलाश की कील स्थापित कर प्रार्थना करें -

यथाचलो गुरुर्मेरु दावा समचलं मम। आरोपितं गृहस्तम्भं तथा त्वमचलं कुरु।।

3- माषभक्तबलि- लोकाचार के अनुसार गर्त के बीच में नारियल फल की स्थापना कर उसके ऊपर लोकपालों के लिए दधिमाषभक्त बलि प्रदान करनी चाहिए -

पूर्व दिशा में इन्द्र के लिए -

गजवाहनाय वज्रहस्ताय तेजोधिपतये एष दधिमाषभक्तबलिरिन्द्राय नमः।।

आग्नेयदिशा में वैश्वानर के लिए -

छागवाहनाय शक्तिहस्ताय वैश्वानरमूर्तये एष दधिमाषभक्तबलिः वैश्वानराय नमः।

दक्षिणदिशा में यम के लिए -

महिषवाहनाय दण्डहस्ताय यममूर्तये एष दधिमाषभक्तबलिः यमाय नमः।।

नैर्ऋत्यदिशा में निर्ऋति के लिए -

गजवाहनाय खड्गहस्ताय निर्ऋतिमूर्तये एष दधिमाषभक्तबलिः नैर्ऋत्ये नमः।।

पश्चिमदिशा में वरुण के लिए -

गरुडवाहनाय शंखचक्रगदापद्महस्ताय वरुणमूर्तये एष दधिमाषभक्तबलिः वरुणाय नमः।

वायव्यदिशा में वायु के लिए -

मृगवाहनाय क्षेत्रपालाय वायुमूर्तये एष दधिमाषभक्तबलिः वायवे नमः।।

उत्तरदिशा में कुबेर के लिए -

नरवाहनाय गदाहस्ताय कुबेराय एष दधिमाषभक्तबलिः कुबेराय नमः।।

ईशानदिशा में त्रिनेत्र के लिए -

वृषभवाहनाय त्रिशूलहस्ताय त्रिनेत्राय एष दधिमाषभक्तबलिः त्रिनेत्राय नमः।।

मध्य में वासुकी के लिए -

पातालक्षेत्रीय सहस्रफणाय द्विसहस्रलोचनाय शक्तिहस्ताय वासुकीनागाय सर्वनागाधिपतये एषः दधिमाषभक्तबलिः सर्वनागाधिपतये नमः।।

नन्दायै एष दधिमाषभक्तबलिः नन्दायै नमः।।

भद्रायै एष दधिमाषभक्तबलिः भद्रायै नमः।।

जयायै एष दधिमाषभक्तबलिः जयायै नमः।।

रिक्तायै एष दधिमाषभक्तबलिः रिक्तायै नमः।।

पूर्णायै एष दधिमाषभक्तबलिः पूर्णायै नमः।।

शिख्यादिवास्तुदेवताभ्य एष दधिमाषभक्तबलिः शिख्यादिवास्तुदेवताभ्यो नमः।

वास्तोष्पतये एष दधिमाषभक्तबलिः वास्तोष्पतये नमः।।

4- विश्वकर्मादि पूजा- इसके बाद खात को भरकर पुनः षोडषोपचार या यथोपचार से पूजा करें। फिर उत्तराङ्ग हवन कर आचार्य, ऋत्विक्, आचार्य इत्यादि को गोदानादि, भूयसी दक्षिणा एवं दान करें। तत्पश्चात् विश्वकर्मापूजन करें -

अज्ञानात् ज्ञानतो वापि दोषाः स्युश्च यदुद्भवाः।

नाशय त्वरितान् सर्वान् विश्वकर्मन् नमोस्तुते।।

तत्पश्चात् कुश या दूर्वा के ऊपर खनित्र (भवन निर्माण के औंजार कुदाल, फावडा आदि) रखकर उसकी पूजा करें -

त्वष्ट्रा त्वं निर्मितः पूर्वं लोकानां हितकाम्यया।

पूजितोऽसि खनित्रित्वं सिद्धिदा भव नो ध्रुवम्।

फिर गृहनिर्माण करने वाले शिल्पि को कुछ द्रव्य प्रदान करें। तत्पश्चात् प्रार्थना एवं विसर्जन कर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताऽध्वरेषु यत्।

स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञक्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतामेति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। विष्णवे नमः। कर्मसाक्षिणे भगवान्सूर्यनारायणाय नमः।।

अभ्यास प्रश्न

7. पवित्री धारण का वैदिक मन्त्र बताइए।
8. गृहारम्भ में कौन सा पदवास्तु बनाकर वास्तुपूजन करना चाहिए?
9. माषभक्तबलि क्या है ?
10. एकाशीतिपदवास्तु बनाने में पश्चिम से आरम्भकर पूर्व की ओर दश रेखाओं के नाम बताइए।
11. एकाशीतिपदवास्तु बनाने में दक्षिण से आरम्भ करके उत्तर की ओर दश रेखाओं के नाम बताइए।
12. एकाशीतिपदवास्तु के अन्दर में शिख्यादि देवताओं की संख्या कितनी है?
13. वास्तुमण्डप के बाहर ईशानादि चारों कोणों में स्थित चरकादि व स्कन्दादि का नाम बताइए।
14. पूर्वादि दिशाओं के स्वामी देवताओं का नाम बताइए।
15. पञ्च शिलाओं के नाम बताइए।
16. उपशिलाओं के ऊपर क्या अंकित करना चाहिए?

17. आठ नागों के क्या नाम हैं?

18. पंच कलशों में क्या अंकित करना चाहिए?

4.5 गृहनिर्माण

पूर्व प्रकार से शिलान्यास करने के उपरान्त वास्तु क्षेत्र अर्थात् पिण्ड से कुछ अधिक जमीन जलपर्यन्त अथवा पृथ्वी के स्तर पर्यन्त (जिस स्थान से दूसरे रंग की मिट्टी बदल जाय, उस तह तक) अथवा पुरुष प्रमाण (साढ़े तीन हाथ या लगभग **6** फीट) पर्यन्त गड्ढ़ा खोदकर उसे बन्दर की खोपड़ी के बराबर प्रमाण वाले पत्थर के टुकड़ों से भर देना चाहिए। इस प्रकार नींव भराई के उपरान्त भित्ति (दीवाल या बीम) निर्माण करना चाहिए। पराशर के मतानुसार काष्ठ और पाषाण के मकान में भित्ति कल्पित पिण्ड के बाहर, ईंट के मकान में आधी पिण्ड के भीतर व आधी बाहर तथा मिट्टी के मकान में पिण्ड के भीतर भित्ति निर्माण करना चाहिए।

भित्ति के मूल की, जल पर अथवा पत्थर पर सर्वप्रथम उसमें पंचरत्न, सुवर्ण, गन्धाक्षतादि छोड़ कर, स्थापना करनी चाहिए। जो भित्ति ऊपर भारी व नीचे हल्की हो, जिसमें गारा कम या अधिक लगा हो अथवा जिसमें सन्धिश्रेणी (जोड़) मालूम होती हो अथवा जो भित्ति कहीं मोटी और कहीं पतली हो, ऐसी भित्तियां धननाशकारक होती हैं। इस प्रकार से नींव व दीवार निर्माण के पश्चात् वास्तुयोजना के अनुसार वास्तुक्षेत्र में गृहनिर्माण करना चाहिए। गृहनिर्माण में गृहदोषों से बचना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

19. शिलान्यास करने के उपरान्त वास्तु क्षेत्र में क्या करना चाहिए?
20. नींव भराई के उपरान्त किसका निर्माण करना चाहिए?
21. पराशर के मतानुसार किस प्रकार भित्ति निर्माण करना चाहिए?
22. भित्ति के मूल की स्थापना कैसे करनी चाहिए?
23. कौन सी भित्तियां धननाशकारक होती हैं?
24. नींव व दीवार निर्माण के पश्चात् क्या करना चाहिए?

4.6 सारांश

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन में आपने सर्वप्रथम शिलान्यास विधि के बारे में पढा। जिसमें आपने जाना कि भवन निर्माण की नींव रखना ही 'शिलान्यास' कहलाता है। इसके लिए उपयुक्त स्थान पर नींव हेतु खोदे हुए गड्ढे (पूर्वोक्त राहुमुख विचार कर किया हुआ खात) में पूजनपूर्वक पाँच शिलाओं को स्थापित किया जाता है। शिलान्यास काल में समुद्रोत्पन्न विविध रत्न, सुवर्ण, चांदी, सर्वबीज, गन्ध, शर, दर्भ, घृत, केतकी पुष्प, मधु, आमिष अर्थात् मांस, मद्य, विविध फल, खीर एवं जलपूर्ण कलशों को प्रत्येक कोने में स्थापित करना चाहिए। अग्नि में विधिवत् आहुतियाँ प्रदान कर मुहूर्तानुरूप गृह के कोनों में सभी की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। सर्वप्रथम आग्नेय कोण (मतान्तर से ईशानकोण) में शिला स्थापित कर पूर्व से प्रदक्षिणा क्रम में अन्य शिलाएं स्थापित करें। इसी प्रकार से स्तम्भारोपण, द्वारावरोहण करना चाहिए। तत्पश्चात् वास्तु पूजन एवं शिलान्यास पूजन विधि के अन्तर्गत आपने एकाशीतिवास्तुपदमण्डल के

निर्माण को जाना। इसके पश्चात् वास्तुमण्डल में ईशान कोण के पद से आरम्भ कर प्रदक्षिण क्रम से चावल के पुंजों पर शिख्यादि 45 देवताओं के साथ वास्तुपुरुष का आवाहन पूजन की विधि को विस्तार से पढा। फिर आपने शिलापूजन के अन्तर्गत जाना कि उपशिला सहित 5 शिलाओं की स्थापना करनी चाहिए। सर्वप्रथम उपशिलाओं के ऊपर क्रमशः पद्म, सिंहासन, तोरण, छत्र, कूर्म एवं चतुर्भुजविष्णु अंकित करना चाहिए। इसके बाद उनमें मन्त्रों से नन्दादि का आवाहन व पूजन करना चाहिए। इसके बाद माषभक्तबलि विधान को आपने विस्तार से जाना। इसके बाद विश्वकर्मादि पूजनोपरान्त आवाहित देवाताओं के विसर्जन विधि के विषय में पढा। इस प्रकार शिलान्यास विधि को जानने के बाद इसके बाद नींव भराई एवं भित्ति (दीवाल या बीम) निर्माण के विषय में पढा। आशा है कि इस पाठ के अध्ययन से आप गृहारम्भ विधि को भलीभांति समझ कर इसके प्रयोग करने में समर्थ होंगे।

4.7 पारिभाषिक शब्दावली

शिलान्यास – भवन निर्माण की नींव में प्रथम शिला (पत्थर) रखना।

बलि – भोजन, उपहार

आमिष – मांस

यज्ञोपवीत – जनेऊ

गौरसर्षप – पीली सरसों

सूर्यार्घ्य – सूर्य के लिए जल अर्पण करना।

स्वस्तिवाचन – कुशलता की कामना से मन्त्रों को बोलना

पंचांगपूजन – गणेश, कलश, गौर्यादि षोडश मातृका व सप्तघृतमातृका, नान्दी या वृद्धि श्राद्ध तथा नवग्रहों की पूजा।

भूतोत्सर्जन – पूजन स्थल से भूत-प्रेतादि को दूर करने के लिए मन्त्रजप

कीलारोपण – कील को गाडना

माषभक्तबलि – उडद व चावल मिश्रित कर देवतादि के निमित्त दिया गया उपहार या भोजन

षोडषोपचार – आवाहन, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान (पंचामृत, गन्ध व शुद्ध) आदि 16 प्रकार की सेवा को अर्पित करना

लोकाचार – स्थान के अनुसार आचरण

खनित्र – भवन निर्माण के औजार कुदाल, फावडा आदि

शिल्पी – राजमिस्त्री इत्यादि

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1- भवन निर्माण की नींव रखना 'शिलान्यास' कहलाता है।

2- नींव हेतु खोदे हुए गड्ढे में पूजनपूर्वक पाँच शिलाओं को स्थापित किया जाता है।

3- बृहत्संहिता के अनुसार पाँच शिलाओं में से पहली शिला अग्निकोण में स्थापित करनी

चाहिए।

4- जहाँ शिलान्यास किया गया हो वहीं पर स्तम्भ (खम्भा) उठाने का कार्य करना चाहिए।

5- गर्गादि ऋषियों के मतानुसार प्रथम शिला का न्यास ईशानकोण में होना चाहिए।

6- काश्यप आदि का मत है कि- सूत्र, भित्ति,शिलान्यास व स्तम्भारोपण का आरम्भ पूर्व-दक्षिण कोण अर्थात् आग्नेय कोण से करना चाहिए।

7- पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उप्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

8- गृहारम्भ में एकाशीतिपदवास्तु बनाकर वास्तुपूजन करना चाहिए।

9- उडद व चावलादि मिश्रित कर देवतादि के निमित्त दिया गया उपहार या भोजन।

10- पश्चिम से आरम्भकर पूर्व की ओर दश रेखाएं- शान्ता, यशोवती, कान्ता, विशाला, प्राणवाहिनी, सत्या, सुमना, नन्दा, सुभद्रा एवं सुरथा।

11- दक्षिण से आरम्भ करके उत्तर की ओर दश रेखाएं- हिरण्या, सुव्रता, लक्ष्मी, विभूति, विमला, प्रिया, जया, ज्वाला, विशोका, विशदा।

12- 45(पैंतालीस)

13- चरकी, विदारी, पूतना व पापराक्षसी। साथ ही स्कन्द, अर्यमा, जृम्भक व पिलिपिच्छ।

14- पूर्व – इन्द्र, आग्नेय – अग्नि, दक्षिण – यम, नैर्ऋत्य – निर्ऋति (राक्षस), पश्चिम – वरुण, वायव्य – वायु, उत्तर – कुबेर, ईशान – रुद्र।

15- नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता व पूर्णा

16- उपशिलाओं के ऊपर क्रमशः पद्म, सिंहासन, तोरण, छत्र, कूर्म एवं चतुर्भुजविष्णु अंकित करना चाहिए।

17- वासुकि, तक्षक, कुलिक, कर्कोटक, पद्म, शंखचूड, महापद्म एवं धनञ्जय।

18- पद्म, महापद्म, शंख, विजय एवं सर्वतोभद्र।

19- शिलान्यास करने के उपरान्त वास्तु क्षेत्र अर्थात् पिण्ड में कुछ अधिक जमीन जलपर्यन्त अथवा पृथ्वी के स्तर पर्यन्त (जिस स्थान से दूसरे रंग की मिट्टी बदल जाय, उस तह तक) अथवा पुरुष प्रमाण (साढ़े तीन हाथ या लगभग **6** फीट) पर्यन्त गड्ढ़ा खोदकर उसे बन्दर की खोपड़ी के बराबर प्रमाण वाले पत्थर के टुकड़ों से भर देना चाहिए।

20- नींव भराई के उपरान्त भित्ति (दीवाल या बीम) निर्माण करना चाहिए।

21- पराशर के मतानुसार काष्ठ और पाषाण के मकान में भित्ति कल्पित पिण्ड के बाहर, ईंट के मकान में आधी पिण्ड के भीतर व आधी बाहर तथा मिट्टी के मकान में पिण्ड के भीतर भित्ति निर्माण करना चाहिए।

22- भित्ति के मूल की, जल पर अथवा पत्थर पर सर्वप्रथम उसमें पंचरत्न, सुवर्ण, गन्धाक्षतादि छोड़ कर, स्थापना करनी चाहिए।

23- जो भित्ति ऊपर भारी व नीचे हल्की हो, जिसमें गारा कम या अधिक लगा हो अथवा

जिसमें सन्धिश्रेणी (जोड़) मालूम होती हो अथवा जो भित्ति कहीं मोटी और कहीं पतली हो, ऐसी भित्तियां धननाशकारक होती हैं।

24- नींव व दीवार निर्माण के पश्चात् वास्तुयोजना के अनुसार वास्तुक्षेत्र में गृहनिर्माण करना चाहिए।

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1- शिलान्यास विधि पर सविस्तृत प्रकाश डालिए।

2- वास्तुपूजन की विधि विस्तार से वर्णित कीजिए।

3- वास्तुपदमण्डल में स्थित देवताओं के आवाहन मन्त्रों को बताइए।

4- वास्तुपूजन में माषभक्तबलि अर्पण की विधि पर प्रकाश डालिए।

5- शिला पूजन विधि पर विस्तृत चर्चा कीजिए।

6- शिलान्यास के उपरान्त गृहनिर्माण के विषय में वर्णन कीजिए।

4.10 सन्दर्भ सहायक पाठ्य सामग्री

1- मुहूर्त चिन्तामणि, दैवज्ञ श्रीरामाचार्य, टीका-केदारदत्त जोशी, पीयूषधारा टीकासहित, (द्वितीयसंस्करण पुनर्मुद्रण 1995), बनारसीदास,

2. बृहद्वास्तुमाला, श्रीरामनिहोराद्विवेदी, सम्पादन- डॉ अशोक थपलियाल (संस्करण 2013) अमर पब्लिकेशन्स, विजयनगर दिल्ली।

3. भारतीय वास्तुशास्त्र (संस्करण 2004) प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी, श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ, नई दिल्ली

4- वास्तुसार, (संस्करण 2006) प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी परिक्रमा प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली

5. वास्तुप्रबोधिनी (संस्करण 2011), डॉ. अशोक थपलियाल,अमर पब्लिकेशन्स, विजयनगर दिल्ली।

6- विश्वकर्मप्रकाश (संस्करण 2019), महर्षि अभय कात्यायन, चौखम्बा पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी।